Ancient Vedic Mantras and Rituals

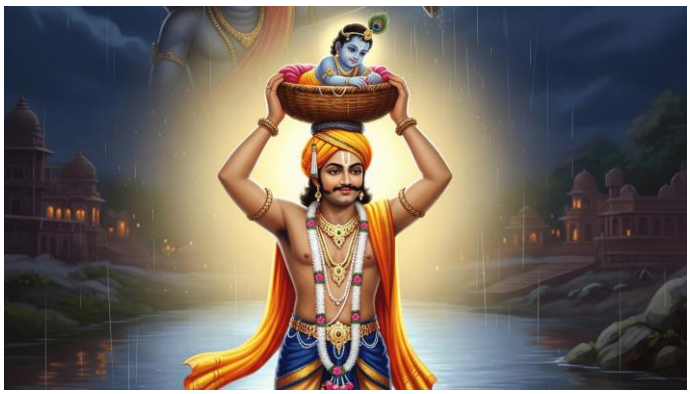

Vasudev Dwadashi | आइए जानें वासुदेव द्वादशी की पूजा विधि और कथा | PDF

हिंदू धर्म में द्वादशी तिथि का विशेष धार्मिक महत्व होता है। प्रत्येक मास में शुक्ल और कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथियाँ आती हैं, और इनमें से कुछ विशेष द्वादशियाँ भगवान विष्णु के विभिन्न स्वरूपों को समर्पित होती हैं। ऐसी ही एक पावन तिथि है **वासुदेव द्वादशी**, जिसे भगवान श्रीकृष्ण के पिताश्री **वासुदेव** देवकीनंदन के नाम पर मनाया जाता है। यह पर्व भक्ति, सेवा और पितृश्रद्धा की भावना से परिपूर्ण होता है।

वासुदेव द्वादशी क्या है?

वासुदेव द्वादशी, हर साल **आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि** को मनाई जाती है। यह दिन भगवान श्रीकृष्ण के पिता **वासुदेव जी** को समर्पित होता है। इस दिन **वासुदेव** जी की पूजा की जाती है और उनके योगदान को स्मरण किया जाता है, जिन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन को प्रारंभिक चरणों में संरक्षित किया और अनेक कष्ट सहकर धर्म की रक्षा में योगदान दिया।

वासुदेव कौन थे?

वासुदेव जी **यदुवंश** के प्रमुख राजा शूरसेन के पुत्र और **देवकी के पति** थे। वह महान ज्ञानी, धर्मनिष्ठ और सत्य के लिए जीवन अर्पण करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने न केवल श्रीकृष्ण को जन्म देने वाली देवकी की रक्षा की, बल्कि मथुरा में कंस के अत्याचारों के बीच अपने पुत्र को सुरक्षित गोकुल पहुँचाकर संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

वासुदेव द्वादशी क्यों मनाई जाती है?

यह पर्व **वासुदेव** जी के त्याग, बलिदान और धार्मिक जीवन को स्मरण करने के लिए मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण को बाल्यकाल में गोकुल पहुंचाना, नंद बाबा के साथ उनका पालन-पोषण सुनिश्चित करना और कंस के आतंक के बीच धर्म की रक्षा करना – ये सब वासुदेव जी की जीवन-गाथा का हिस्सा हैं।

इस दिन को मनाने का उद्देश्य है:

- **वासुदेव** जी के **त्याग और धर्मनिष्ठा** का सम्मान करना
- **पितृभक्ति और सेवा** की भावना को जागृत करना
- भगवान श्रीकृष्ण के जीवन में उनके **पिता के योगदान** को समझना
- **सत्य, संयम और विवेक** के मार्ग पर चलने की प्रेरणा लेना

वासुदेव द्वादशी का महत्व

1. पितृ सेवा का प्रतीक

यह तिथि हमें सिखाती है कि माता-पिता का स्थान भगवान से भी ऊपर होता है। **वासुदेव** जी का पूजन कर हम उनके माध्यम से अपने जीवन में पितृभक्ति और सेवा की भावना को जागृत करते हैं।

2. धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा

वासुदेव जी ने अपने जीवन में जो निर्णय लिए, वे कठिन और जोखिमभरे थे, फिर भी उन्होंने धर्म की रक्षा की। यह दिन हमें भी बताता है कि चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन हो, धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

3. त्याग और तपस्या का सम्मान

वासुदेव जी ने न केवल स्वयं के सुखों का त्याग किया, बल्कि भगवान श्रीकृष्ण को सुरक्षित रखने के लिए अपनी संतान तक से दूर रहे। उनका त्याग आज भी प्रेरणादायक है।

4. संपूर्ण समाज को संदेश

यह पर्व एक परिवार में पिता की भूमिका और उनकी जिम्मेदारियों को महत्व देता है, जो आज की पीढ़ी के लिए अत्यंत आवश्यक शिक्षा है।

वासुदेव द्वादशी पर क्या किया जाता है?

1. व्रत और उपवास

इस दिन श्रद्धालु **निर्जल या फलाहारी व्रत** रखते हैं। कुछ लोग केवल एक समय भोजन करते हैं और दिन भर भगवान श्रीकृष्ण और **वासुदेव** जी का ध्यान करते हैं।

3. भगवत कथा और वासुदेव चरित्र पाठ
कई स्थानों पर श्रीकृष्ण जन्म की कथा, वासुदेव-देवकी की कथा, और उनके संघर्षों की व्याख्या की जाती है। व्रतीजन इन कथाओं को सुनते हैं और जीवन में सत्य और धर्म का मार्ग अपनाने का संकल्प लेते हैं।

4. दान और पुण्य
वासुदेव द्वादशी पर दान करना अत्यंत शुभ माना गया है। अन्न, वस्त्र, जल पात्र, छाता, दक्षिणा, और जरूरतमंदों को भोजन कराने का विशेष महत्व है। यह दिन पितरों की स्मृति में **पिंडदान** या **तर्पण** करने के लिए भी उपयुक्त माना गया है।

5. श्रीकृष्ण मंदिरों में विशेष आयोजन
इस दिन कई जगहों पर **मथुरा, वृंदावन**, और अन्य कृष्ण मंदिरों में विशेष पूजा, **कीर्तन**, **भजन संध्या** और **झूलन उत्सव** भी मनाया जाता है।

वासुदेव द्वादशी व्रत विधि

- **प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें।**
- वासुदेव जी का चित्र या प्रतीक सामने रखें।
- दीप, धूप, पुष्प, तिलक, नैवेद्य, जल आदि से पूजा करें।
- भगवान विष्णु के मंत्रों और श्रीकृष्ण नाम के साथ '**ॐ वासुदेवाय नमः**' मंत्र का जाप करें।
- ब्राह्मण को भोजन कराएं और यथाशक्ति दान दें।
- दिन भर संयमपूर्वक रहें और सात्विक भोजन करें या व्रत रखें।
- शाम को आरती करें और भजन कीर्तन करें।

वासुदेव द्वादशी की पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब कंस ने देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल दिया और उनकी सात संतानों की हत्या कर दी, तब आठवें पुत्र के रूप में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। रात में आकाशवाणी के आदेश पर वासुदेव ने अपने नवजात पुत्र को लेकर यमुना पार की और गोकुल में नंद बाबा के घर पहुंचाया। यह कार्य अत्यंत जोखिम भरा था, लेकिन वासुदेव जी ने अपने धर्म और कर्तव्य को निभाया।
भगवान विष्णु ने स्वयं वासुदेव जी के माध्यम से यह कार्य करवाया, जिससे भविष्य में धर्म की पुनर्स्थापना हो सके। इस त्याग और सेवा की स्मृति में वासुदेव द्वादशी का आयोजन होता है।

समाज और युवाओं के लिए संदेश

आज के युग में जब पारिवारिक संबंधों की अहमियत कम होती जा रही है, **वासुदेव** द्वादशी हमें सिखाती है कि पिता का स्थान कितना महत्वपूर्ण है। युवाओं को इस दिन वासुदेव जी के चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिए कि कैसे एक व्यक्ति अपने परिवार, धर्म और समाज के लिए बलिदान देता है।

वासुदेव द्वादशी न केवल एक धार्मिक तिथि है, बल्कि यह त्याग, सेवा, पितृभक्ति और धर्म की रक्षा का प्रतीक पर्व है। यह दिन हमें हमारे पूर्वजों, विशेषकर पितृशक्ति को सम्मान देने की प्रेरणा देता है। वासुदेव जी के जीवन से हम यह सीखते हैं कि सच्चे धर्म और कर्तव्य पथ पर चलने के लिए त्याग और साहस दोनों की आवश्यकता होती है।

Related Articles

Govind Dwadashi

Dwadashi Shradh

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: